प्रस्ताव

वार्षिक आम सभा बैठक

सुरक्षा • विकास • जागरण • एकता

अप्रैल 15th & 16th, 2017

राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच

Forum for Awareness of National Security

गुरुग्राम

प्रस्ताव क्र.-5

हिंदमहासागरीय क्षेत्र

हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) हमेशा सुर्खियोंमें रहा है। यह पश्चिम में स्वेज नहर से पूर्व में स्ट्रेट ऑफ मलक्का की तरफ तक फैली हुई है। यह इस तरह से स्थित है कि आईओआर न केवल भारत के विशाल भू-रणनीतिक महत्व, आर्थिक समृद्धि, ऊर्जा और उसकी आजादी के केंद्र में है,बल्कि पश्चिमी, दक्षिणी और पूर्वी एशियाई देशों के लिए उसके समुद्री हित भी इसमें निहित हैं। लगभग 80 फीसदी वैश्विक व्यापार इस क्षेत्र से होकर गुजरता है।चीन की 70 फीसदी से अधिक ऊर्जा आवश्यकता (तेल) आईओआर से होकर ही निकलती है। भारत की ऊर्जा आवश्यकता के लिए भी मामला कुछ ऐसा ही है। कुछ अनुमानों के अनुसार, इसी क्षेत्र में दुनिया की ऊर्जा और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का लगभग आधा हिस्सा है। एशिया ऊर्जा खपत व मांग का बड़ा गढ़ है और ऊर्जा की बढ़ती मांग के चलते ही आईओआर का भू-रणनीतिक वातावरण काफी अस्थिर है।

वर्ष 1949 अपनी आजादी के बाद से चीन आईओआर में और अधिक मुखर बनने की कोशिश करतारहा है, जिसे वह न केवल अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए नियंत्रित करना चाहता है, बल्कि हाइड्रोकार्बन, खनिजों और कई अन्य मूल्यवान संसाधनों के विशाल भंडार जैसे समृद्ध संसाधनों के चलते ऐसा करता रहा है। इसलिए चीन यहां वायु व थल सैन्य बलों के अलावा अपनी नौसैनिक शक्ति का विकास और उसे मजबूत करने की कोशिश में जुटा है।

उनका मानना है कि जो राष्ट्र हिंद महासागर पर नियंत्रण रखता है, वह पश्चिम एशिया को भी नियंत्रित करता है। कुछ ऐसा ही मत अमेरिकी भू-रणनीतिकार और इतिहासकार एडमिरल अल्फ्रेड थायर माहाका भी रहा है। चीन की नौसैन्यशक्ति और संपत्तियां उनकी रक्षा जरूरतों के मुकाबले काफी अधिक हैं।जाहिर है किवह (चीन) एक सुपर पावर बनने की महत्वाकांक्षा पाले हुए है।

भारत और बाकी दुनिया के लिए आईओआर बहुत महत्वपूर्ण क्यों है ?

भारत के पास कुल 7,500 किलोमीटर के दायरे में समुद्र तट है, जिससे पाकिस्तान, चीन, म्यांमार, बांग्लादेश और श्रीलंका की सीमाएं लगती हैं और यह अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के तीन तरफ महासागरों और समुद्रों से घिरा है। अंतर्राष्ट्रीय बेड़े की समीक्षा (इंटरनेशलफ्लीट रिव्यू) के विदाई समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था,"भारत के1200 द्वीप व भूखंड क्षेत्र और

2.4 मिलियन वर्ग किलोमीटर में फैले इसके बहुत बड़े विशेष आर्थिक क्षेत्र,हिंद महासागर के आर्थिक महत्व को बढ़ाते हैं।

हमारे लिए, यह नजदीकी पड़ोसी देशों और व समुद्री सीमा से लगते अन्य पड़ोसियों के साथ एक सामरिक पुल के रूप में भी कार्य करता है। पिछले साल मार्च महीने में मॉरीशस में, मैंने हिंदमहासागर केलिए हमारे दृष्टिकोण को रखा था। हिंद महासागर क्षेत्र प्राथमिकता के साथ मेरी सबसे अहम नीतिओं में एक है। 'सागर' को लेकर हमारी दृष्टि में हमारा दृष्टिकोण स्पष्ट है, जिसका अर्थ है यह सागर क्षेत्र मेंसभी के लिए है और सभी की सुरक्षा वविकास ही हमारा रुख है।"

नौपरिवहन की महाशक्तियों से इतर हिंदमहासागर क्षेत्र शांतिपूर्ण और संघर्ष मुक्त क्षेत्र बना रहे, इस बात पर भारत खासगंभीर है और उसकी मंशा भी यही है। जोकि इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (आईओआरए) जैसे विभिन्न क्षेत्रीय समूहों के साथ की गई पहल से स्पष्ट है।'लुक ईस्ट पॉलिसी' के एक हिस्से के तौर पर, भारत ने तटीय राज्यों के बीच सहयोग कायम करना शुरू कर दिया है।

कोई औद्योगिक विकास,कोई व्यावसायिक विकास, कोई स्थिर राजनीतिक ढांचा तब तक संभव नहीं है, जब तक कि उसके किनारे (तट) संरक्षित न हों। शीत युद्ध के अंत के बाद से अधिकांश संघर्ष भी हिंद महासागर क्षेत्र में या इसके आसपास हुए हैं। जिसके परिणामस्वरूप, दुनिया की लगभग सभी प्रमुख शक्तियां हिंद महासागर क्षेत्र में पर्याप्त सैन्य बलों की तैनाती कर रखी हैं।

सीमा मुद्दों को हल करने के प्रयास के साथ ही भारत चीनसे आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए भीबेहद सक्रिय है। भारत को चीन के व्यापार असंतुलन के प्रति सजग रहना चाहिए। साथ ही,आईओआर में चीन के विकास कार्यों व 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' के सैन्यकरण को लेकर भी सतर्क रहना चाहिए। ऊपर में उल्लेख किए गए कारणों के चलते आज आईओआर में शक्ति के संतुलन की आवश्यकता है। दुनिया की सभी प्रमुख शक्तियां इस क्षेत्र की सुरक्षा और चीन की बढ़ती नौसेन्य ताकत व चीनी इरादों के मद्देनजर चिंता जताते हुए इस क्षेत्र में अपनी मौजूदगी शुरू कर दी है।

यह भारत के लिए महत्वपूर्ण है कि वहएक मजबूत और प्रभावी सैन्य बल, विशेष रूप से नौसेना क्षमता के जरियेएक सुरक्षित समुद्री वातावरण बनाने के लिए कदम उठाए। भारतीय नौसेना आज के समय में एक 'ब्लू वॉटर नेवी' है, जिसके पास वृहद प्रक्षेपण क्षमताएं हैं,

लेकिन वह काफी नहीं है। अब बिना किसी देरी के हमारी क्षमताओं को और बढ़ाने के लिए बहुत कुछ करने की आवश्यकता है।

संकल्प प्रस्तावना:

1. हमारी नौसेन्य क्षमता केआधुनिकीकरण के साथ इसे युद्ध स्तरपर मजबूत किया जाना चाहिए। इसको लेकर हम लंबे समय से सोते रहे और हमारा रवैया ढीला रहा।
2. चीन के साथ व्यापार असंतुलन को प्राथमिकता के साथ दुरुस्त किया जाना चाहिए।
3. भारत को अपनी पूर्व की ओर देखो नीति (लुक ईस्ट पॉलिसी) को आक्रामक रूप से आगे बढ़ाने चाहिए। इस क्षेत्र के राज्यों के साथ अपने राजनयिक संबंधों में सुधार करना चाहिए।
4. आईओआर में चीन के आक्रामक रुख के खिलाफ दुनिया कीप्रमुख शक्तियों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास किए जाने चाहिए।
5. नौपरिवहन (नेविगेशन) की आजादी को हर कीमत पर बनाए रखना जरूरी है।